ग्रामोद्योग तथा मधुमक्खी पालन में पायी सफलता

विकासखण्ड भितरवार अंतर्गत कार्यरत ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति ग्राम समाया, खैरवाया के समिति अध्यक्ष श्री दिनेश जाटव, सचिव श्री मनोज विश्वकर्मा, मुकेश बघेल तीनों मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र होकर बी.एस. डब्ल्यू की कक्षा में ग्रामोद्योग तथा मधुमक्खी पालन के प्रशिक्षकों से भितरवार में प्रशिक्षण प्राप्त करके ग्राम की निजी भूमि के 2 बीघा रकबे में 300 मुधुमक्खीपालन की पेटियॉ लगवाकर 45 दिन में अपनी आय दो से तीन गुना की है।

इसकी लागत प्रति पेटी 500 रू. लगाकर 45 दिन में तीनों छात्रों ने 15 लाख की लागत में लगभग 8.5 लाख रू. का शहद और मोम बेचकर अपनी आय दो से

तीन गुना करके आओ बनाऐं अपना स्वर्णिम म.प्र. के बिन्दु खेती को लाभ का धंधा बनाया है। यह सब मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम में दिये गये प्रशिक्षण का परिणाम है।

शिवांश खाद: बनाने की विधि और परिणाम

झाबुआ जिले के विकासखण्ड मेघनगर के ग्राम पंचायत चोखवाडा में प्रस्फुटन समिति व सीएमसीएलडीपी छात्र भगतसिंह डामोर द्वारा गांव में जैविक खाद को बढ़ावा देने के लिए शिवांश खाद बनाने का निर्णय लिया गया। इस खाद को बनाने का प्रशिक्षण एन.एम. संस्था द्वारा दिया गया। सर्वप्रथम गांव में चौपाल बैठक करके ग्रामीणों को शिवांश खाद के बारे में बताया गया कि इस खाद को बनाने के लिए हमें एक एकड़ खेत में जरूरी चीजें जैस– पेड़ों का सूखा कचरा, धान के सूखे डंठल, सूखी घास या खरपतवार, गेंहू के सूखे डण्ठल, सूखी पत्तियां, पशुओं का बिछावन, हरी घास, पौधों का कोई भी हिस्सा, हरी खरपतवार, पानी वाले पौधें, गोबर, आदि की जरूरत होती है। अन्य उपकरण जैसे– चारा काटने की मशीन, पानी, फावड़ा, प्लास्टिक शीट किसी छायादार वृक्ष के नीचे पहली परत में सूखी सामग्री और दूसरी परत में हरी सामग्री, तीसरी परत में गोबर। इसी तरह सूखी सामग्री 9 तस्ले, हरी सामग्री, 6 तस्ले गोबर, 3 तस्ले ढेर की उंचाई, कंधे तक 6 से 8 परत होनी चाहिए। फिर इसे ढकना चाहिए। प्लास्टिक शीट से और फिर तापमान देखकर समय अनुसार पलटना चाहिए और अठारह दिन में यह खाद बनकर तैयार हो जाएगी और पहली बार शिवांश खाद

शिवांश खाद का निर्माण करते हुए ग्रामीणजन

के इस्तेमाल के साथ यूरिया का इस्तेमाल आधा कर सकते हैं और एनओपी/डीएपी खाद का इस्तेमाल पूरी तरह से बंद कर फसल में सिर्फ शिवांश खाद का ही उपयोग किया जा सकता है।

शिवांश खाद से मिट्टी की जल धारण क्षमता में बढ़त होती है। फसलों को पोषण और बीमारियों से लड़ने की ताकत मिलती है। इसके प्रयोग से खरपतवार कम पैदा होते हैं, जिससे कम मजदूरी लगती है। इससे आमदनी में बढ़त होती है। उपज में 15–40 प्रतिशत की बढ़त होती है। इस खाद से सालाना 1 एकड़ 8 ढेर और 1 हैक्टेयर से 20 ढेर सालाना और बंजर खारी जमीन के अच्छे परिणाम के लिए इसमें दुगुना खाद डाल सकते हैं।